शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 100-102

द्वितीय एवं विदेशी भाषा के रूप में हिंदी की संयुक्त क्रिया के अधिगम में आगत समस्याएँ

केशरी नंदन
शोधार्थी (भाषाविज्ञान)
डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

Received– 27June - 2026
Accepted-29 June- 2026
Published– 30 June 2026
Corresponding Author-
केशरी नंदन
शोधार्थी (भाषाविज्ञान)
डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
DOI-https://doi.org/10.67275/SU.2026.041425
Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।
Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।

OPEN ACCESS
Shodh Utkarsh
CC-BY 4.0

हिंदी की संयुक्त क्रिया संरचना एवं अर्थ की दृष्टि से विशिष्ट स्थान रखती है। हिंदी क्रिया में संयुक्त क्रिया के अभाव में विचारों को अभिव्यक्त करना दुष्कर है। हिंदी क्रिया की संपूर्ण अभिव्यक्ति में संयुक्त क्रिया का प्रयोग बहुतायत होता है। हिंदी की भाषिक संरचना में संयुक्त क्रिया जटिलतम संरचनाओं में से एक है। इसकी अर्थगत सूक्ष्मता एवं विविधता अनुपम है। संयुक्त क्रिया की संरचना में दो क्रियाएँ एक साथ प्रयुक्त होती हैं, जिसमें प्रथम क्रिया या मुख्य क्रिया का अपना कोशीय अर्थ होता है तथा दूसरी क्रिया कोशीय अर्थ को छोड़कर पहले क्रिया के अर्थ को रंजित करती है, इसलिए इसे रंजक क्रिया भी कहते हैं। उदाहरण देखिए-

आज सुबह छह बजे उठ गया था।

मैंने उसका काम कर दिया है।

उपयुक्त उदाहरणों में पहले और दूसरे वाक्य में क्रमशः 'उठ गया' और 'कर दिया' संयुक्त क्रियाएँ हैं। पहले उदाहरण में क्रिया की पहली क्रिया 'उठ' अपने मूल या कोशीय अर्थ में वाक्य में प्रयुक्त हुई है तथा दूसरी क्रिया 'गया' अपने मूल अर्थ को छोड़कर पहली क्रिया के अर्थ को रंजित करते हुए 'उठने का कार्य पूर्ण होने' के अर्थ को द्योतित कर रही है। इसी प्रकार दूसरे वाक्य में 'कर दिया' का अर्थ किसी दूसरे का कार्य संपन्न करने के अर्थ में है, जिसमें 'कर' अपने मूल अर्थ में तथा 'दिया' पहली क्रिया के अर्थ को पूर्णता प्रदान करती है। 'दिया' का प्रयोग इस संदर्भ में किसी दूसरे के कार्य को पूरा करने के अर्थ में हुआ है।

संयुक्त क्रिया का प्रयोग-हिंदी क्रिया में संयुक्त क्रिया का प्रयोग कितना अधिक होता है, इस संदर्भ में हिंदी कार्पोरा परियोजना, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के अंतर्गत विकसित कॉर्पस में 'निकलना' क्रिया के प्रयोग से देखा जा सकता है। 3 करोड़ कॉर्पस में 'निकलना' क्रिया का प्रयोग 18,307 हुआ है। इसका विवरण इस प्रकार है-

क्र. सं.	'निकलना' क्रिया के विभिन्न प्रयुक्त रूप	आवृत्ति
1.	निकल + जाना के विभिन्न रूप	3260
2.	निकल + आना के विभिन्न रूप	1343
3.	निकल + पड़ना के विभिन्न रूप	772
4.	निकल + भागना के विभिन्न रूप	109
5.	निकल + लेना के विभिन्न रूप	20
	कुल	5504

'निकलना' क्रिया के साथ संयुक्त क्रिया की रंजक क्रियाओं रूप में 'आना', 'जाना', 'निकलना', 'पड़ना', 'भागना' का प्रयोग होता है। निकलना क्रिया के समस्त प्रयोगों में से संयुक्त क्रियाएँ- 'निकल आना', 'निकल जाना', 'निकल लेना', 'निकल पड़ना', 'निकल भागना' के विभिन्न रूपों के साथ 5504 बार प्रयुक्त हुआ है। इस डाटा से अंदाज लगाया जा सकता है कि हिंदी में संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग कितना व्यापक होता है।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 100-102

संयुक्त क्रिया का विकास-आधुनिक समय में हिंदी में संयुक्त क्रिया का जो स्वरूप है, पूर्व में ऐसा नहीं था। हिंदी भारतीय आर्य शाखा की एक भाषा है और इस शाखा का एक लंबा इतिहास रहा है। पिछले 3500 वर्षों का लिखित इतिहास हमारे पास मौजूद है, जिससे ज्ञात होता है कि उस समय में भाषा का स्वरूप किस प्रकार था तथा इसमें किस प्रकार का परिवर्तन अलग-अलग काल खंडों में हुआ है। 1500 ईसा पूर्व वैदिक संस्कृत तथा तत्पशचात पाणिनि के लौकिक संस्कृत में संयुक्त क्रिया का प्रचलन नहीं था। इस संबंध में काशीनाथ सिंह (1976) का मत है कि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में "जिन अर्थों की व्यंजना के लिए भिन्न-भिन्न संयुक्त क्रियाओं का विधान है, उन्हीं का प्रकाश प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं में प्रत्ययों और लकारों से होता था।" अपभ्रंश काल में भारतीय आर्य भाषाओं में संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग दिखाई देता है। इस प्रकार वैदिक काल से अपभ्रंश तक के कालखंड को संयुक्त क्रिया का विकास काल माना जा सकता है। कई भाषाविदों ने तथ्यों के आधार पर माना है कि आधुनिक हिंदी का प्रारंभिक स्वरूप अपभ्रंश के उत्तरार्ध में प्रस्फुटित हुआ। हिंदी ही नहीं, अन्य आधुनिक आर्य भाषाएँ भी अपभ्रंश के समय में अलग-अलग रूपों में दिखाई देने लगी थीं। इस प्रकार हिंदी की संयुक्त क्रिया अपने ज्ञात इतिहास के आरंभ में भाषा की प्रकृति योगात्मक होने के कारण प्रत्यय के रूप में क्रिया में प्रयुक्त हुआ करती थी। समय के अनुसार भाषा घिसती गई और यह योगात्मक से वियोगात्मक होती चली गई। विकास के अंतिम चरण में यह दो अलग-अलग क्रियाओं के रूप में परिणत हो गई।

संयुक्त क्रिया पर विभिन्न विद्वानों का मत-17वीं शताब्दी के अंत में हिंदी व्याकरण लेखन का प्रारंभ हुआ। किंतु इस कालखंड में हिंदी व्याकरण की रचना भारतीय विद्वानों द्वारा नहीं, बल्कि भारत को अपना उपनिवेश बनाने की दृष्टि से बाहर देश से आए विदेशियों ने अपने नागरिकों के लिए यहाँ की भाषा को समझने के लिए की। इन विद्वानों ने हिंदी भाषा के व्याकरण की रचना अपनी भाषा के लिए विकसित व्याकरणिक पद्धतियों के आधार पर की। इनका उद्देश्य हिंदी भाषा की संरचना के आधार पर भाषा को विश्लेषित करना नहीं था, बल्कि उन्होंने अपनी आवश्यकता के अनुसार हिंदी भाषा के व्याकरण को निर्मित किया। फलतः हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार सभी पक्षों को विश्लेषित नहीं किया गया। केटेलर का **हिंदुस्तानी ग्रामर**(1698) हिंदी की पहली व्याकरण रचना मानी जाती है। इस व्याकरण में हिंदी के काल के बारे में जानकारी दी गई है, लेकिन संयुक्त क्रिया के बारे में कोई विवरण नहीं है। इस संदर्भ में तेज भाटिया (1981) का विचार है कि यह हिंदी व्याकरण न केवल हिंदी का सबसे पुराना व्याकरण है, बल्कि हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में अधिगम करने के लिए यह एक पहला व्याकरण है। मूल रूप से इस व्याकरण को डच में लिखा गया था। लगभग 4 दशक के बाद मिलर ने इसे लैटिन भाषा में अनूदित कर कुछ संशोधन के साथ 1743 ई. में प्रकाशित किया था। 18वीं शताब्दी में बेंजामिन शुल्जे का **ग्रामेटिका हिंदोस्तानिका** (1743), जॉन फरग्यूशन का **ए ग्रामर ऑफ हिंदुस्तानी लैंग्वेज** (1773) आदि वैयाकरणों ने हिंदी क्रिया के काल तथा अन्य पक्षों पर प्रकाश डाला, लेकिन संयुक्त क्रिया की विशिष्ट प्रकृति पर इन विद्वानों का ध्यान आकृष्ट नहीं हो पाया। एच एस केलॉग ने ए ग्रामर ऑफ हिंदी लैंग्वेज (1876) में संयुक्त क्रिया के बारे में विस्तार से चर्चा की है। उन्होंने अर्थ के आधार पर संयुक्त क्रिया को 12 भागों में विभाजित किया-

1.Intensives- जैसे- तीव्रता, अचानकता, संपन्नता, निरंतरता क्रूरता आदि, जैसे- फेंक देना, चल देना, मार डालना, खा जाना आदि।
2.Potentials- क्षमता या संभावना के लिए प्रयुक्त, जैसे - दौड़ सकना (वह दौड़ सकता है।)
3.Completeness- कार्य पूर्ण करना, जैसे- खा चुकना (वह खाना खा चुका है।)
4.Frequentatives- बार-बार होना, जैसे- पढ़ा करना
5.Desiratives- इच्छा, जैसे- रोकना चाहना
6.Inceptives- शुरुआत, जैसे- कहने लगना
7.Permissives- अनुमति, दूसरी क्रिया के रूप में देना' का प्रयोग, जैसे- जाने देना
8.Aquisitives- दूसरी क्रिया के रूप में 'पाना' का प्रयोग, जैसे- जाने नहीं पाना
9.Continuatives- निरंतरता, दूसरी क्रिया के रूप में 'रहना' का प्रयोग,जैसे- वह गाती रहती है।
10. Progressives- लगातार प्रगति करना, जैसे- वह लिखता जाता है।
11.Staticals- कार्य करते हुए गति में होना, जैसे- वह रोते हुए आता है।
12. Reiteratives- दो क्रियाएँ समानार्थी एक ही अर्थ के होते हैं, जैसे- बिना सोचे-समझे

इसके अतिरिक्त उन्होंने किसी क्रिया के साथ संज्ञा या विशेषण के जुड़ने से बनने वाले शब्दों को संयुक्त क्रिया के अंतर्गत ही रखा था। संयुक्त क्रिया के अंतर्गत दूसरी क्रिया या रंजक क्रिया जो अपने मूल अर्थ को छोड़ देती है, उसकी संख्या सीमित है। अलग-अलग विद्वानों ने इस रंजक क्रिया की व्याख्या अलग-अलग ढंग से की है। इस क्रिया का नाम भी अलग-अलग दिया गया है। कई विद्वानों ने इसे सहायक क्रिया माना है, तो कुछ विद्वानों ने इसे रंजक क्रिया की संज्ञा दी है। अंग्रेजी में इसे explicator, vector या light verb कहा गया है। हिंदी में रंजक क्रियाओं की संख्या सीमित है, किंतु इसकी संख्या कितनी है, यह अलग-अलग विद्वानों ने अपने तरीके से व्याख्या की है। कामता प्रसाद गुरु (1920) ने अनुसार रंजक क्रियाओं की संख्या 13 है- उठना, बैठना, आना, जाना, लेना, देना, पड़ना, डालना, रहना, रखना, निकलना, चुकना और सकना। आर सी मैकग्रेगर (1995) की दृष्टि से रंजक क्रिया की संख्या 14 है- जाना, लेना, देना, पड़ना, उठना, डालना, मारना, बैठना, आना, चलना, निकलना, पहुँचना, पाना और रखना। आर्येंद्र शर्मा (1958) के मतानुसार आना, जाना, उठना, बैठना, लेना, देना, पड़ना, डालना, रहना, चुकना, सकना, मरना, मारना और रखना कुल 14 रंजक क्रियाएँ हैं। सूरजभान सिंह (1985) ने रंजक क्रियाओं की संख्या 12 मानी है- जाना, लेना, देना, पड़ना, उठना, डालना, बैठना, आना, मारना, निकलना, मरना और छोड़ना। चतुर्भुज सहाय (2008) इसे सहायक क्रिया की संज्ञा देते हुए कुल 21 बताया है- आना, जाना, चलना, टपकना, धमकना, उठना, बैठना, पड़ना, लगना, चुकना, रहना, बनना, करना, लेना, देना, पाना, डालना, रखना, मारना, बसना और सकना। रवि प्रकाश गुप्त (2014) ने इसे रंजक क्रिया कहा है और इसकी संख्या 14 माना है- आना, जाना, चलना, निकलना, बैठना, पड़ना, चुकना, लेना, देना, डालना, रखना, मारना और

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 100-102

प्रयुक्त दूसरी क्रियाओं की संख्या कितनी है, इसमें एकरूपता नहीं बन पाई है। अन्य भाषा के रूप में हिंदी को सीखने विद्यार्थियों को पहली समस्या यही होती है कि रंजक क्रियाएँ कौन-कौन सी हैं और उनका अर्थ क्या है। सर्वमान्य रंजक क्रियाएँ हैं- उठना, बैठना, आना, जाना, देना, पढ़ना, डालना, रखना और लेना। अधिकांश विद्वानों ने 'चुकना' और 'सकना' को भी रंजक क्रिया के रूप में रखा है। ध्यान देने की बात है कि सामान्यतः 'चुकना' और 'सकना' का प्रयोग मुख्य क्रिया के रूप में नहीं होता। ये किसी क्रिया के बाद ही प्रयुक्त होती हैं। इसी प्रकार 'टपकना', 'बसना', 'धमकना', 'बनना' क्रियाओं को संयुक्त क्रिया के अंतर्गत दूसरी क्रिया सहायक क्रिया के रूप में चतुर्भुज सहाय ने विश्लेषित किया है। स्पष्ट है कि संयुक्त क्रिया की संख्या पर विभिन्न विद्वानों के एक मत नहीं हैं। इस कारण जब विदेशी एवं द्वितीय भाषा के रूप में अध्येता हिंदी के व्याकरण में संयुक्त क्रिया का अध्ययन करता है, तो संयुक्त क्रिया की अवधारणा बहुत स्पष्ट रूप से उन्हें दिखाई नहीं देती। इस दृष्टि से यह आवश्यक है की रंजक क्रियाओं का विवरण उचित आधार देकर स्पष्ट किया जाए। पूर्व के वैयाकरण मिश्र क्रिया को संयुक्त क्रिया के अंतर्गत ही विश्लेषित किया करते थे, किंतु आधुनिक वैयाकरणों ने मिश्र क्रिया को संयुक्त क्रिया से अलग किया है, जो ज्यादा तर्कसंगत लगता है।

मुख्य क्रिया के साथ रंजक क्रियाओं का प्रयोग

द्वितीय एवं विदेशी भाषा के रूप में हिंदी क्रिया को सीखते समय दूसरी बड़ी समस्या विद्यार्थियों के समक्ष उत्पन्न होती है, वह है मुख्य क्रिया के साथ विभिन्न रंजक क्रियाओं का प्रयुक्त होना। किसी मुख्य क्रिया के साथ पाँच रंजक क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं, तो किसी के साथ दो-तीन। हिंदी की प्रायः सभी क्रियाओं के साथ कोई-न-कोई रंजक क्रिया प्रयोग में आती है। किंतु प्रत्येक क्रिया अपने तरीके से रंजक क्रियाओं का प्रयोग करती है। इसके बारे में कोई नियम स्पष्ट नहीं है। जो व्यवहृत होता है, वही मान्य है। इस दृष्टि से अध्येता को काफी परेशानी होती है कि किसी क्रिया के साथ रंजक क्रिया का प्रयोग किया जाए या नहीं किया जाए। उदाहरण के लिए 'भागना' क्रिया के साथ 'आना,' 'चलना,' 'जाना,' 'निकलना' रंजक क्रियाएँ के रूप में प्रयुक्त होती हैं। 'भेजना' क्रिया के साथ 'देना' और 'रखना', 'उजाड़ना' क्रिया के साथ 'जाना' तथा 'हिलना' क्रिया के साथ 'जाना' और 'उठना' क्रियाएँ रंजक के रूप में प्रयुक्त होती हैं। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रत्येक क्रिया की रंजक क्रियाएँ संख्या में ज्यादा या कम हो सकती हैं। साथ ही किस क्रिया के साथ कौन सी रंजक क्रिया का प्रयोग किया जाएगा यह इस संबंध में कोई स्पष्ट नियम नहीं है। यह पूर्णत उस भाषा को बोलने वाले के लोगों के व्यवहार पर निर्भर है।

अब तक प्रकाशित हिंदी क्रिया कोश

हिंदी क्रिया को लेकर तीन कोश प्रकाशित हुए हैं। सर्वप्रथम हेल्मुत नेस्पिताल का **हिंदी क्रिया कोश** (1997) में प्रकाशित हुआ था। इस कोश में उन्होंने संयुक्त क्रिया पर ज्यादा बल दिया है। कोश द्विभाषी है हिंदी और अंग्रेजी में। इस कोश में उन्होंने यथासंभव संयुक्त क्रिया का प्रयोग भी बताया है, किंतु प्रस्तुत किए गए उदाहरण अधिकांशतः साहित्य से दिए गए हैं। उदाहरण के वाक्य कहीं-कहीं पर बहुत बड़े हैं, जिससे अध्येता को अर्थ समझने में कठिनाई हो सकती है। दूसरा कोश (2017) में सुशील गुप्ता ने **हिंदी अंग्रेजी क्रिया कोश** प्रकाशित किया था। इस कोश में अर्थ अंग्रेजी तथा उदाहरण हिंदी में दिए गए हैं। कोश में कई सारी संयुक्त क्रियाएँ वास्तविक रूप से प्रयुक्त होती हैं या नहीं होती, इसे पुनः देखने की आवश्यकता है। यह बहुत हद तक नेस्पिताल के कोश से मिलता-जुलता हुआ है। इसी प्रकार त्रिभुवननाथ शुक्ल (2021) के **हिंदी क्रिया कोश** में क्रियाओं के अर्थ दिए गए हैं, लेकिन संयुक्त क्रिया के बारे में चर्चा या विश्लेषण नहीं किया गया है। इन कोशों के विवरण से स्पष्ट है कि द्वितीय एवं विदेशी भाषा की दृष्टि से क्रिया कोश निर्मित करने की आवश्यकता है, जो वास्तविक प्रयोग आधारित हो। आधुनिक समय में अध्येता कोश कॉर्पस के आधार पर बनाए जा रहे हैं, जो कि शिक्षार्थी केंद्रित हैं।

*****

संदर्भ ग्रंथ-

1. केटेलर, जॉन जो., *हिंदुस्तानी ग्रामर*, 1698
2. केलॉग, एच. एस., *ए ग्रामर ऑफ हिंदी लैंग्वेज*, 1876
3. शुल्जे , बेंजामिन *ग्रामेटिका हिंदोस्तानिका*, 1743
4. फरग्यूशन, जॉन *ए ग्रामर ऑफ हिंदुस्तानी लैंग्वेज*, 1773
5. गुरु, कामता प्रसाद, *हिंदी व्याकरण, 1921*
6. शर्मा, आर्येंद्र, *ए बेसिक ग्रामर ऑफ मॉडर्न हिंदी*, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 1958
7. शर्मा, काशीनाथ, *हिंदी में संयुक्त क्रियाएँ*, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1976
8. भाटिया, तेज, *ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन ग्रामेटिकल ट्रैडीशन*, इ जे. ब्रील, लाएडेन, नीदरलैंड, 1981
8. सिंह, सूरजभान, *हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण*, साहित्य सहकर, दिल्ली, 1985.
9. मैक्ग्रेगर, आर.एस., *आउटलाइन ऑफ हिन्दी ग्रामर*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007.
10. नेपिस्ताल, हेल्मुत, *हिंदी क्रिया कोश*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997.
11. गुप्त, रविप्रकाश, *वृहद् हिंदी व्याकरण*, अरु पब्लिकेशन्स प्रा.लि., दरियागंज, दिल्ली, 2014.
12. गुप्ता, सुशीला, संपा., *हिंदी-अंग्रेजी क्रिया-कोश*, हिंदुस्तानी प्रचार सभा, मुंबई, 2017.
13. शुक्ल, त्रिभुवननाथ, *हिंदी क्रिया कोश*, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2021
14. सहाय,चतुर्भुज, हिंदी *पदविज्ञान*, कुमार पब्लिकेशन, 2008

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 100-102